जिद्दू कृष्णमूर्ति का शैक्षिक दर्शन एवं वैकल्पिक शिक्षा में योगदान का अध्ययन

सुनील कुमार
सहायक प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग
कालीचरण पी.जी. कालेज,
लखनऊ

प्रो. चंदना डे
विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग,
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय,
लखनऊ

सार

जिद्दू कृष्णमूर्ति (1895-1986) एक प्रख्यात स्वतंत्र विचारक, सर्वोपरि लेखक, आध्यात्मिक वक्ता और बीसवीं सदी के महानतम दार्शनिकों में से एक थे। दुनिया भर में वैकल्पिक शिक्षा की विचारधारा पर उनका प्रभाव काफी है। वे पारंपरिक शिक्षाविद नहीं थे। शिक्षा की समझ के रूप में उनके पास शैक्षिक सिद्धांत या तकनीक का प्रचार या प्रसार करने के लिए कोई औपचारिक योग्यता नहीं थी। हालाँकि वह स्कूली शिक्षा, इसकी धारणाओं, मान्यताओं और दमनकारी प्रथाओं के सबसे प्रभावशाली आलोचक के रूप में उभरे थे। उन्होंने शिक्षा से संबंधित विभिन्न अवधारणाओं को एक नया महत्व और आयाम देकर दुनिया भर में स्कूली शिक्षा और शिक्षा पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा है। जीवन और समाज पर शिक्षा के व्यापक परिणामों से दुखी होकर, उन्होंने अपनी अपरंपरागत और चिंतन, अंतर्दृष्टि को शिक्षा में प्रस्तुत किया, जिसे उन्होंने सही शिक्षा 'कहा।' उनके द्वारा परिकल्पित शिक्षा ही सही मायने में जीवन के महत्व को प्रदर्शित करती है। इसका कार्य हर समय व्यक्तियों को अपने स्वयं के प्रति सच्चे होने में मदद करना है। यह प्यार और अच्छाई में फलने-फूलने का पूरा अवसर देने के साथ-साथ उसे पूरी तरह से एक पूर्ण मनुष्य के रूप में विकसित करने के लिए बच्चे के चारों ओर सर्वश्रेष्ठ वातावरण का निर्माण करना है। ताकि वह जीवन भर लोगों, वस्तुओं और विचारों से प्रभावी सम्बंध स्थापित कर सके। भारत और विदेश में वैकल्पिक शिक्षा में उनका योगदान अकल्पनीय है। यह अध्ययन कृष्णमूर्ति के दृष्टिकोण से वर्तमान शिक्षा के प्रमुख सरोकारों को संबोधित करने की तत्काल आवश्यकता को सामने लाता है। यह कृष्णमूर्ति के जीवन दर्शन, शैक्षिक दर्शन का गहन अध्ययन और उनके योगदान का आश्वासन देता है। वैकल्पिक शिक्षा के लिए इस अध्ययन को करने के लिए विशिष्ट और वर्णनात्मक अनुसंधान विधियों को निहित किया गया है और विशेष रूप से माध्यमिक डेटा को वर्गीकृत, व्याख्या और विश्लेषण किया गया है।

संकेत शब्द- *सही शिक्षा, स्वभाव और अच्छाई, धार्मिक मन का परिवर्तन, रचनात्मकता, रूपांतरित समाज*

१. प्रस्तावना

एक जागरूक प्रक्रिया के रूप में शिक्षा को प्रासंगिक बने रहने के लिए कई कार्यों को पूरा करना पड़ता है। सामाजिक समस्याओं के समाधान के माध्यम से समाज की बेहतरी इसके सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है। इस प्रकार सामाजिक समस्याएँ शिक्षा की प्रमुख चिंताएँ हैं। ये ऐसी समस्याएं हैं, जिनका दर्शन को समाधान करना होता है। "शिक्षा की प्रक्रिया कभी भी दर्शन के बिना अपने आप में एक स्पष्ट शुद्धता प्राप्त नहीं करेगी।" दर्शनशास्त्र और शिक्षा इतने अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं कि सभी समय के सभी महान शिक्षाविद महान दार्शनिक और इस के समर्थक थे। दोनों में से किसी को भी व्यावहारिक रूप से अलग नहीं किया जा सकता है। "शिक्षा और दर्शन एक सिक्के के दो पहलू हैं"।

दर्शन और शिक्षा इस प्रकार एक दूसरे के पूरक हैं। "एक दूसरे के बिना समझ में नहीं आता है।" यही कारण है कि दर्शन प्राचीन शास्त्रीय काल से शिक्षा के विभिन्न पहलुओं का निर्धारण करता रहा है। लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में प्राकृतिक और व्यावहारिक प्रवृत्तियों के प्रभाव के कारण समय के परिप्रेक्ष्य में नई प्राथमिकताएं सामने आई हैं, दार्शनिक विचारों को अलग रखा गया है और इसके परिणामस्वरूप शिक्षा में अत्यंत बदलाव आया है। मानव आयामों की उपेक्षा ने शिक्षा की पूरी प्रक्रिया को बाधित किया। शिक्षा सामाजिक समस्याओं को हल करने में इतनी स्पष्ट रूप से असफल रही है, इसलिए समाज की आकांक्षाओं को पूरा नहीं करने के लिए सही आलोचना की गई है। और इसलिए स्पष्ट रूप से लोगों को मौलिक चुनौतियों के लिए तैयार करने में असमर्थ है। मानव समाज जब भी दर्शन की मदद लेने के लिए ऐसी गंभीर समस्याओं का सामना करता है। बीसवीं सदी ने स्पष्ट रूप से दुनिया भर में शैक्षिक विचारों में कट्टरपंथी प्रगति देखी। आधुनिक भारतीय चिंतकों में जिद्दू कृष्णमूर्ति स्कूली शिक्षा, इसकी धारणाओं और दमनकारी प्रथाओं के सबसे प्रभावशाली आलोचक के रूप में उभरे हैं। शायद वह शिक्षा के पारंपरिक अर्थों में एक शिक्षक नहीं थे। जीवन और समाज पर शिक्षा के व्यापक परिणामों से दुखी होकर, उन्होंने अपनी अपरंपरागत और चिंतन, अंतर्दृष्टि को शिक्षा में प्रस्तुत किया।

कृष्णमूर्ति के विचार का मूल अपनी सभी जटिलताओं के साथ मानवीय परिस्थितियों का विस्तार था। वे लोगों के जीवन में दुखों और उथल-पुथल के बारे में गहराई से चिंतित थे। वह समाज में व्याप्त होने वाले पूर्वाग्रहों, भेदभावों, और असमानताओं के बारे में समझाना था, लेकिन लोगों को इन परिस्थितियों से उबरने के लिए पर्याप्त रूप से उत्साही और प्रतिबद्ध होना चाहिए था। इसलिए उन्होंने शिक्षा के परिणामों पर विचार किया था। यही कारण है, कि उन्होंने मानवता की सेवा करने के लिए जीवन भर समर्पित और अथक प्रयास किया। लोगों को बदलने के लिए और समाज को बदलने के लिए उनका दृढ़ता से मानना था। कि कई मानसिक स्थितियां जो मानसिक अशांति का कारण बनती हैं, और दुखों को शिक्षा द्वारा संबोधित नहीं किया जाता था। उनका शैक्षिक लक्ष्य लोगों को सभी प्रकार के भौतिक बंधन से उबरने और सच्ची मुक्ति पाने में मदद करना था। लेकिन उनका अंतिम लक्ष्य लोगों को सही शिक्षा के माध्यम से मनुष्य को परिवर्तित कर के समाज को परिवर्तित करना था।

२. शैक्षिक दर्शन

जिद्दू कृष्णमूर्ति (1895-1986) एक प्रख्यात स्वतंत्र विचारक, सर्वोपरि लेखक, आध्यात्मिक वक्ता और बीसवीं सदी के महानतम दार्शनिकों में से एक थे। जिन्होंने दुनिया भर में वैकल्पिक शिक्षा की विचारधारा को प्रभावित किया है। वह एक शिक्षक नहीं थे। क्योंकि उनके पास शैक्षिक सिद्धांत या तकनीक का प्रचार या प्रसार करने की कोई औपचारिक योग्यता नहीं थी। हालाँकि वह स्कूली शिक्षा, इसकी धारणाओं, मान्यताओं और दमनकारी प्रथाओं के सबसे प्रभावशाली आलोचक के रूप में प्रकट हुए है। उन्होंने शिक्षा से संबंधित विभिन्न अवधारणाओं

को एक नया महत्व और आयाम देकर दुनिया भर में स्कूली शिक्षा और शिक्षा पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा है। उसके लिए शिक्षा सभी परीक्षाओं को पास करने, उच्च रैंक प्राप्त करने, नौकरी, पद, वेतन पाने के बारे में नहीं है। यह केवल अकादमिक उत्कृष्टता प्राप्त करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह अधिक व्यापक है। और इसमें व्यक्ति के आंतरिक और बाहरी दुनिया का सामंजस्यपूर्ण विकास शामिल है। व्यक्ति को प्यार और अच्छाई में विकसित होने और विकसित होने में मदद करने के बारे में है ताकि वह जीवित रह सके। सभी जीवित प्राणियों के साथ सद्भाव में यहां 'फलने-फूलने' की धारणा का तात्पर्य है, एक-दूसरे के संबंध में व्यक्ति की चेतना का जागृत होना। वह वर्तमान शिक्षा के अत्यधिक आलोचक थे, विशेष रूप से इसके उद्देश्य, प्रक्रियाएं, सामग्री और शैक्षिक केंद्रों के वातावरण, शिक्षा के सिद्धांत के आधार पर टिप्पणी करते हुए, वे कहते हैं, बुद्धि को विकसित करने में आधुनिक शिक्षा मानव अस्तित्व की कुल प्रक्रिया की समझ के बिना अधिक से अधिक सिद्धांतों और तथ्यों की पेशकश करती है। यह हमें विचारहीन संस्थाओं में बना रही है; यह हमारे व्यक्तिगत व्यवसाय को खोजने में हमारी मदद करने की दिशा में बहुत कम है। वर्तमान शिक्षा के खिलाफ उनका मुख्य आरोप तकनीक और मानव आयामों की उपेक्षा पर अत्यधिक और विशेष जोर है। वर्तमान शिक्षा के नकारात्मक पक्ष को सामने लाते हुए कृष्णमूर्ति कहते हैं - हमारी तकनीकी प्रगति शानदार है, लेकिन इसने केवल एक दूसरे को नष्ट करने की हमारी शक्तियों को बढ़ाया है, और प्रत्येक भूमि में भुखमरी और दुख को ही बढाने का काम किया है। हम एक शांतिपूर्ण और खुशहाल व्यक्ति नहीं हैं। शिक्षा का कोई भी रूप जो एक भाग के साथ खुद को चिंतित करता है, और पूर्ण मनुष्य के साथ अनिवार्य रूप से संघर्ष और पीड़ा को बढ़ाता है।

३. शिक्षा की अवधारणा

कृष्णमूर्ति एक 'आध्यात्मिक पवित्र, मन' के विकास की एक प्रक्रिया के रूप में शिक्षा की कल्पना करते हैं। पवित्रता सभी चीजों की नींव है, यह सभी चीजों के मूल में निहित है और इसलिए यह वह है जो प्रासंगिक है मूलभूत तत्वों में विच्छेदित नहीं जा सकती है। सभी चीजें एकता या एकीकृत संपूर्णता के हिस्से हैं और यह संपूर्ण एकीकृत पवित्र है। यह केवल आध्यात्मिक मन है जो समग्रता को समग्रता में समझा जा सकता है। जब हम आध्यात्मिक मन की बात करते हैं, तो हम धर्म की पूरी संरचना को नकारने नही जा रहे हैं क्योंकि यह पूरी तरह से गलत है, इसका कोई अर्थ नहीं है। यह संबद्ध नहीं है। किसी भी संगठित प्रणाली, या विश्वास के साथ बल्कि यह खोजपूर्ण, सत्य की तलाश है। यह बच्चे को अपने जीवन में हर घटना को सीखने के अवसर के रूप में लगातार सीखने में मदद करने के लिए समर्पित है, चाहे वह सफलता, विफलता, भय, संघर्ष, ईर्ष्या, निराशा हो। शिक्षा का उद्देश्य संपूर्ण और पूर्ण उत्कर्ष को देखना होना चाहिए। आध्यात्मिक मन के लिए सरलतम अवधि में कृष्णमूर्ति के लिए उपयुक्तता एक संबंधित प्रक्रिया है।

४. शिक्षा के कार्य

शिक्षा का कार्य मानव का निर्माण करना है, जो एकीकृत हैं और इसलिए बुद्धिमान हैं। सामर्थ्य आवश्यक है, जो है उसे समझने की क्षमता है, और इस क्षमता को जगाने के लिए, स्वयं में और दूसरों में, शिक्षा है।

हमारे समाज में पूर्वाग्रह, भेदभाव, शोषण, अभाव और असमानताएँ व्याप्त हैं। हमें अपने भाई-बहनों, दोस्तों, सहकर्मियों, पड़ोसियों से ईर्ष्या है, अतः रिश्तों में बाधा आ रही है। इसलिए हम दुख, उथल-पुथल और संघर्ष से पीड़ित हैं। अस्तित्ववाद ने पूरी दुनिया को परेशान कर दिया है। यह हमारी शिक्षा प्रणाली है जिसने हमें इस तरह की गंभीर परिस्थितियों में रहने के लिए तैयार किया है। हम सभी इस विकृत समाज में समाहित

होने के लिए बने हैं। स्वयं के परिवर्तन के माध्यम से अपने समाज को बदलने के लिए शिक्षा का मुख्य कार्य होना चाहिए। क्योंकि यह मुद्दा वर्तमान संदर्भ में प्रमुख चिंता का विषय बन गया है।

शिक्षा हमें जीने के लिए स्वतंत्र बनाती है। हमें एक स्वतंत्र वातावरण बनाना चाहिए जहां कोई सत्य की खोज करने के लिए स्वतंत्र हो। यह सत्य सतत खोज के माध्यम से निरंतर अवलोकन के माध्यम से ही महसूस किया जा सकता है। लेकिन यह केवल तभी संभव है जब कोई बिना किसी भय के सीखता है। भय अन्वेषण, अवलोकन और सीखने के मार्ग में बाधा डालता है। शिक्षा का कार्य आंतरिक और बाहरी भय से मुक्त करना है जो मानव विचारों, रिश्तों और स्नेह का निर्वहन करती है। शिक्षा का कोई मतलब नहीं है जब तक कि आप जीवन के विशाल विस्तार को अपनी सभी सूक्ष्मताओं के साथ, असाधारण सुंदरता, अपने दुख और खुशियों के साथ समझने में मदद न करें। शिक्षा का सच्चा कार्य उस बुद्धिमत्ता को समझना है जो सभी समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास करेगी। बिना किसी डर के, स्वतंत्र रूप से सोचने की क्षमता है, ताकि आप अपने लिए खोज शुरू करें कि क्या मौलिक है, क्या सच है, लेकिन अगर आप भयभीत हैं, तो आप कभी भी बुद्धिमान नहीं होंगे। किसी भी प्रकार की महत्वाकांक्षा, आध्यात्मिक या सांसारिक, चिंता को जन्म देती है, भय: इसलिए महत्वाकांक्षा स्पष्ट, सरल, प्रत्यक्ष, और बुध्दिमत्ता युक्त मष्तिष्क को लाने में मदद नहीं करती है।

५. सही शिक्षा

वर्तमान विश्व अनेक संकटो, युद्धों, पर्यावरणीय आपदाओं, विभाजनकारी सोच, आतंकवाद और घृणा से घिरा हुआ है। राजनीतिक समाधान विफल होते दिखाई दे रहे हैं। समाज में केवल एक मौलिक परिवर्तन शायद इन बढ़ते संकटों को संबोधित कर सकता है। ऐसा मौलिक परिवर्तन तभी हो सकता है जब युवाओं को सही शिक्षा दी जाए। हमारी शिक्षा प्रणाली हमें इस तरह से संवेदनशील बनाने में पूरी तरह से विफल रही है ताकि हम समझ सकें कि हमारा अस्तित्व विश्व समुदाय के कारण है। हमारी प्रणाली में सही शिक्षा को विकसित करने की तत्काल आवश्यकता है जो दुनिया के साथ प्रकृति के साथ साम्य और सद्भाव में रहने में मदद करता हो जो आगे एक स्थायी समाधान दुनिया के सामने प्रस्तुत करती है। जीवन और समाज पर शिक्षा के ऐसे सभी व्यापक परिणामों से दुखी होकर, उन्होंने अपनी परंपरागत सूझ और अंतर्दृष्टि को शिक्षा में प्रस्तुत किया, जिसे उन्होंने 'सही शिक्षा' कहा है।

उनके द्वारा कल्पना की गई सही शिक्षा सही मायने में जीवन के महत्व को समझाती है। इसका कार्य हर समय व्यक्तियों को अपने स्वयं के प्रति इमानदार होने में मदद करना है। यह प्यार और अच्छाई में फलने-फूलने का पूरा अवसर देने के साथ-साथ उसे पूरी तरह से एक पूर्ण इंसान के रूप में विकसित करने के लिए बच्चे के चारों ओर सही वातावरण का निर्माण करना, ताकि वह जीवन भर लोगों, वस्तुओं और विचारों से सही रूप से जुड़ा रहे। यह सही शिक्षा ही है जो हमें मानव जाति के लिए जिम्मेदार बनाती है। कृष्णमूर्ति बताते हैं। दुनिया में किसी भी बदलाव के लिए सही शिक्षा के मॉडल को लागू करने की जरूरत है, सही शिक्षा अपने आपको को खोजने में मदद करनी चाहिए कि आप वास्तव में क्या हैं, शिक्षा का कार्य, किसी की नकल करने के लिए नहीं है, बल्कि हर समय खुद के लिए है। सही शिक्षा की अवधारणा कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन का मुख्य केंद्र है। वह एकमात्र शिक्षा के सही अर्थों की कल्पना करते है, जो हमें अपनी समस्याओं के समाधान का पता लगाने में सक्षम बनाता है, कृष्णमूर्ति द्वारा परिकल्पित 'सही शिक्षा' की धारणा उनके विचारों के माध्यम से अच्छी तरह से परिलक्षित होती है।

६. बाल शिक्षा

बाल शिक्षा में कृष्णमूर्ति की विशेष रुचि उनके अवलोकन में परिलक्षित होती है उन्होंने कहा कि एक बच्चे के लिए सही शिक्षा तभी लाई जा सकती है जब घर के साथ-साथ स्कूल भी रूढ़िवादी विचारों से मुक्त हो। स्कूल और घर के वातावरण के बीच समानता होनी चाहिए। कृष्णमूर्ति का मानना था कि विचारहीन समाज की संरचना को पूरी तरह से, मौलिक रूप से केवल शिक्षा के माध्यम से बदला जा सकता है।

७. विद्यालय

कृष्णमूर्ति ने कहा कि एक स्कूल को एक बच्चे के लिए घर जैसा होना चाहिए। स्कूल को लेकर उसके मन में किसी तरह की झिझक या डर नहीं होना चाहिए। इन सब के बाद एक स्कूल एक ऐसी जगह है जहाँ छात्र को खुश होना चाहिए, स्वतंत्र रूप से दौडना, बैठना, खेलना और यहां तक कि बात करना या कार्य करना। वह एक पैटर्न या प्रणाली के अनुसार कार्य करने के लिए भयभीत या मजबूर नहीं होना चाहिए। यह एक ऐसी जगह है जहां सीखने की कला सिखाई जा रही है। यदि छात्र खुश नहीं है, तो वह इस कला को सीखने में असमर्थ है। (कृष्णमूर्ति, 1979)

एक स्कूल एक ऐसी जगह है जहाँ व्यक्ति जीवन की संपूर्णता के बारे में सीखता है। शैक्षणिक उत्कृष्टता पूरी तरह से आवश्यक है लेकिन एक स्कूल में इससे कहीं अधिक शामिल है। यह एक ऐसी जगह है जहां शिक्षक और छात्र दोनों को पता चलता है, कि न केवल बाहरी दुनिया, ज्ञान की दुनिया, बल्कि उनकी अपनी सोच, अपना व्यवहार भी ज्ञान है। (कृष्णमूर्ति, 1984)

८. उद्देश्य

शिक्षा का उद्देश्य बच्चे की क्षमताओं के विकास और उसके जीवन को आकार देने में अच्छे शिक्षकों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। कृष्णमूर्ति के अनुसार, शिक्षक का कार्य एक बच्चे में प्रतिस्पर्धा या तुलना की भावना को ठीक करना है। यह प्रतिस्पर्धी भावना है जो उसे एक विशेष महत्वाकांक्षा के लिए सबसे अधिक विकास की ओर ले जाती है, क्योंकि महत्वाकांक्षा उसे यांत्रिक बनाती है, उसे सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने या उसे अलग करने के लिए मजबूर करती है। परीक्षा एक और कारक है जो एक बच्चे में श्रेष्ठता या हीनता का तत्व पैदा करता है। इसलिए परीक्षा के दुष्प्रभावों को कम करना भी सामूहिक रूप से शिक्षकों का एक प्रमुख कर्तव्य है।

९. शिक्षण की विधि

कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का अंतिम उद्देश्य स्वयं को जानना है। यही ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है और इस ज्ञान को प्राप्त करने की उपयोगी विधि को लागू करने पर बल दिया है। इस लिए कृष्णमूर्ति कक्षा में किसी भी विधि को लागू करने से इनकार नहीं करते हैं। व्याख्यान विधि या प्रदर्शन विधि लागू करना गलत नहीं है। कोई भी तकनीक या कार्यप्रणाली लागू की जा सकती है जो छात्रों को सबसे अधिक पसंद आए यह तकनीकी सभी प्रकार के ज्ञान पर लागू की जा सकती है। लेकिन जहां तक मनोवैज्ञानिक व्यवहार परिवर्तन के लिए क्रिया विधि लागू करने पर बल दिया है।

१०. शिक्षण और प्रेम

किसी के मन और खुशी, स्नेह के बीच घनिष्ठ संबंध है। हालाँकि एक बड़ा आनंद है, जब प्यार होता है। प्रेम का अर्थ है, अपार करुणा। यह शुरू से ही प्यार से सरोकार रखने वाला है। उसे उसकी सभी गतिविधियों, व्यवहार और बात करने के तरीके से परिलक्षित होना चाहिए। यह कभी भी आंशिक नहीं हो सकती। सही

शिक्षा के माध्यम से मनुष्य के कुल विकास में, शिक्षक द्वारा प्रेम की गुणवत्ता को पोषित किया जाना चाहिए ... प्रेम भावना नहीं है, न ही यह भक्ति है। प्रेम को ज्ञान के माध्यम से नहीं लाया जा सकता है। (कृष्णमूर्ति, 1961) बिना प्रेम के शिक्षा देना निहायत ज्ञान होने के बावजूद निर्मम है। पूर्ण स्वतंत्रता का आनंद लेने पर एक बच्चा बेहतर सीख सकता है और यह केवल स्नेह की भावना के तत्वावधान में संभव है।

११. शिक्षक-शिक्षार्थी अनुपात

कृष्णमूर्ति का दर्शन शिक्षण प्रक्रिया में संवाद की भूमिका को बहुत महत्व देते हैं, यही कारण है कि शिक्षक-शिक्षार्थी अनुपात उसके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। अधिक शिक्षक-शिक्षार्थी अनुपात एक बाधा है क्योंकि यह संवाद के बजाय एकालाप की ओर जाता है। एक भीड़ वाली कक्षा केवल 'क्या सोचना है' प्रदर्शित करने के लिए सीमित है, जबकि एक कम छात्रों की कक्षा में व्यक्ति कैसे सोचना है' की ओर जाता है। इसलिए इस विषय को कृष्णमूर्ति द्वारा बताया गया है- "शिक्षक और छात्र के बीच एक सीधा और महत्वपूर्ण संबंध लगभग असंभव है जब शिक्षक को बड़ी और असहनीय संख्याओं से तौला जाता है। (कृष्णमूर्ति, 1955) सामूहिक रूप से सही तरह की शिक्षा संभव नहीं है। प्रत्येक बच्चे का अध्ययन करने के लिए धैर्य, सतर्कता और बुद्धिमत्ता की आवश्यकता होती है यह कौशल, गहन रुचि और स्नेह की भावना से ऊपर उठता है।

१२. शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध

स्वस्थ शिक्षा द्वारा सिखाए गए अनुपात द्वारा प्रत्येक बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान शिक्षक और छात्रों के बीच एक मधुर और स्नेहपूर्ण संबंध विकसित करना सिखाता है। कृष्णमूर्ति ने कहा कि अनौपचारिक या औपचारिक प्रकार के संबंध शिक्षकों-छात्रों के बीच होने चाहिए। जो एक बच्चे को पूर्ण स्वतंत्रता से युक्त बनाने के लिए प्रेरित करता है। उनके आपसी संपर्क कई कारकों पर निर्भर करते है। शिक्षक-शिक्षार्थी संपर्क में भिन्नता की स्थिति उनकी की प्रकृति पर निर्भर करती है ... स्थिति शारीरिक वातावरण, शिक्षक के व्यक्तित्व, कक्षा में पढ़ाए जा रहे विषय की प्रकृति से प्रभावित हो सकती है। (थापन, 2006)

१३. रचनात्मकता

रचनात्मकता और बुद्धिमत्ता: रचनात्मकता को आत्म ज्ञान द्वारा प्राप्त किया जाता है। रचनात्मक होना अलग है और बिना किसी धारणा के स्वतंत्र रूप से सोचने की मांग करता है। यह कोई उपहार या प्रतिभा नहीं है। स्वतंत्रता रचनात्मकता का एक अनिवार्य तत्व है। एक छात्र प्रतिभा के बिना रचनात्मक हो सकता है। रचनात्मकता केवल हमारे विचारों को प्रकट करने की क्षमता नहीं है। "यह एक ऐसा तत्व है जिसमें, मैं' नहीं, मेरा 'यह एक मन की स्थिति है जहां कोई स्वयं नहीं है। " सृजनात्मकता एक ऐसी स्थिति है जिसमें अकेले ही वास्तविकता हो सकती है, सभी चीजों का निर्माता "(कृष्णमूर्ति, 1952) आत्म-रुचि का अभाव रचनात्मकता को जन्म देता है .." एक व्यक्ति जिसके पास बुद्धिमत्ता है, इसलिए आत्म-हित से मुक्त है (कृष्णमूर्ति) 1954) "रचनात्मक होने का मतलब है कि उस स्थिति में होना जिसमें सत्य अस्तित्व में आ सकता है और सत्य तभी अस्तित्व में आ सकता है जब विचार प्रक्रिया का पूर्ण समापन हो। जब मन पूरी तरह से मजबूर होने के बिना भी रहता है, तो क्रिया के एक निश्चित पैटर्न में मजबूत किया जाता है, यह निर्माण है। कृष्णमूर्ति की शिक्षाएं बच्चे को भयमुक्त बनाती हैं। जब तक हम बुद्धिमान होने का व्यवहार नहीं करेंगे, तब तक हम भय से छुटकारा नहीं पा सकते। तो सवाल यह है कि बुद्धिमान कैसे बनें। जब तक हम इंटिग्रेशन ब्रीड्स इंटेलीजेंस के रूप में एकीकृत नहीं हो जाते हैं तब तक हम बुद्धिमान नहीं हो सकते हैं। नस्लों का विखंडन और खंडित मनुष्य बुद्धिमान नहीं हो सकता है। "हम कई हिस्सों से बने हैं: कभी-कभी हम ईर्ष्यालु, हिंसक होते हैं, अन्य समय में हम विनम्र, विचारशील और शांत होते हैं। अलग-अलग क्षणों में हम अलग-अलग प्राणी हैं: हम कभी पूरे नहीं

Vol. 9, Issue: 5, May: 2021
(IJRSML) ISSN: 2321 - 2853

होते हैं, कभी पूरी तरह से एकीकृत नहीं होते हैं ... जब एक इंसान के कई चाहने वाले होते हैं, तो वह कई प्राणियों में अंदर तक समाहित जाता है "(कृष्णमूर्ति, 1961)

१४. पाठ्यक्रम

वर्तमान परीक्षा केंद्रित पाठ्यक्रम ने सीखने की सुविधा के बजाय पाठ्यक्रम को पूरा करने की दिशा में शिक्षकों का पूरा ध्यान आकर्षित किया है। यह केवल बौद्धिक और व्यावसायिक लक्ष्यों की प्राप्ति तक सीमित है और भौतिक, सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक और सौंदर्य संबंधी पहलुओं से बच जाता है। कृष्णमूर्ति ऐसे किसी भी पाठ्यक्रम के पूरी तरह से खिलाफ थे। कृष्णमूर्ति के अनुभव और जीवन के प्रत्येक पहलू को गतिविधियों के अनुसार पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए, जिसके माध्यम से छात्र सभी जीवित प्राणियों के साथ सद्भाव से रहना सीख सकते हैं। यही कारण है कि उन्होंने 'आर्ट ऑफ लिसनिंग' पर बहुत ध्यान केंद्रित किया है। 'सुनना एक चमत्कार है', वे कहते हैं। उन्होंने सुनने की कला के विकास पर जोर दिया और वह कहते है, यदि हम सुनने की कला 'सीखते हैं तो यह हमारे सामने एक व्यक्ति के साथ जुड़ने में मदद करेगा। इससे जो बात की जा रही है और छुपाने के लिए यह समझा जाएगा कि क्या यह सच है या गलत है। इसके अलावा हम सही निर्णय पर पहुंचने की स्थिति में होंगे। उन्होंने एक व्यापक पाठ्यक्रम पर जोर दिया और इसे 'मूल पाठ्यक्रम' कहा, जो सीखने के लिए अवसरों की पर्याप्त सुविधा प्रदान करता है। कला, जीवन जीने के कौशल से युक्त तर्कसंगत, स्वतंत्र रूप से और निडर होकर सोचने में सक्षम हो, सर्वांगीण, संतुलित विकास सुनिश्चित करना और प्राकृतिक रुचियों का विकास करना संभावित रूप से क्षमता विकसित करें।

१५. परीक्षा और मूल्यांकन

वैकल्पिक शिक्षा को जीवन जीने की कला 'सीखने पर जोर देना चाहिए और छात्रों की प्राकृतिक, रुचियों को विकसित करने के लिए सतत मूल्यांकन को अपनाना चाहिए। परीक्षा-केंद्रित मूल्यांकन ने वर्तमान शिक्षा को इसके पतन की ओर अग्रसर किया है। नतीजतन एग्जामिनेशन 'वर्तमान शिक्षा की प्रमुख समस्याओं में से एक के रूप में उभरा है। कृष्णमूर्ति मूल्यांकन के इस अवगुण से अवगत थे। इसलिए उन्होंने कहा कि छात्रों को परीक्षा के दबाव से मुक्त महसूस करना चाहिए। शिक्षक छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए कई अनौपचारिक तरीके जैसे कक्षा में प्रस्तुति, असाइनमेंट, फॉर्मेटिव टेस्ट आदि को लागू कर सकते हैं। प्रारंभिक मूल्यांकन शिक्षण और सीखने में सुधार करने के लिए प्रतिक्रिया प्रदान करता है। यह छात्रों को कक्षा में आगे बढ़ने में मदद करता है। पूरी मूल्यांकन प्रक्रिया मूल्यांकन किए बिना अवलोकन करने 'के विचार पर आधारित होनी चाहिए। शिक्षकों को अंक या ग्रेड प्रदान करने के बजाय रिपोर्ट लिखना पसंद करना चाहिए क्योंकि किसी भी त्वरित निष्कर्ष पर आना जल्दबाजी होगी। इससे शिक्षकों को यह समझने में मदद मिलती है कि छात्र प्रश्नों को समझने में असमर्थ क्यों हैं।

१६. निष्कर्ष

कृष्णमूर्ति ने शैक्षिक उद्देश्यों, सामग्री, विधियों और शैक्षिक प्रक्रिया के अन्य तत्वों और ऐसे सभी मुद्दों को संबोधित करने के लिए व्यवहार में उनके कार्यान्वयन की एक वैकल्पिक अवधारणा का सुझाव दिया। लेकिन दुर्भाग्य से उनके सुझावों को संकीर्ण अर्थों में अव्यावहारिक या गलत समझा गया था। यह शायद इसलिए है क्योंकि उन्होंने एक ऐसे युग में आध्यात्मिक मन के विकास की प्रक्रिया के रूप में शिक्षा की कल्पना की थी जब लोग एक धर्मनिरपेक्ष समाज के बारे में उत्साही थे। शायद कृष्णमूर्ति के लिए आध्यात्मिक मन केवल शब्द के अर्थ तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह वैज्ञानिक, खोजी, सत्य की खोज करने वाला यानी सचेत मन है।

इसलिए आज कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार को देखने और समझने के लिए सबसे अधिक आवश्यक वर्तमान संदर्भ में देखने की चीज है।

कृष्णमूर्ति के विचार सही मार्ग का अनुसरण करते हैं और उन कमियों को दूर करने के संभावित उपाय सुझाते हैं जो वर्तमान शिक्षा में गहराई से निहित हैं। यह मनोवैज्ञानिक, सामाजिक रूप से और साथ ही आध्यात्मिक रूप से वास्तविकता के रूप में पाया जाता है। और इसका पर्याप्त शैक्षणिक समर्थन भी है। शिक्षा के बारे में उनके विचार न केवल शिक्षा के लिए एक वैकल्पिक अवधारणा है, बल्कि जीवन का एक नया विचार भी है। इस तरह के परिवर्तनों के आधार पर योजना निश्चित रूप से प्रगतिशील और गतिशील है।

आत्म अनुभव के माध्यम से सीखना आत्म ज्ञान के निर्माण के लिए अनुकूल है। यह छात्रों को समस्याओं के समाधान के लिए ज्ञान प्रदान करने में सक्षम बनाता है। छात्र आत्मनिर्भरता, आत्म सम्मान, सशक्त महसूस करते हैं और स्वयं को मौलिक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करते हैं। कृष्णमूर्ति का अंतिम उद्देश्य लोगों को सही शिक्षा के माध्यम से बदलकर वर्तमान समाज का निर्माण करना था। उनकी 'रूपांतरित समाज 'की अवधारणा एक ऐसे समाज को संदर्भित करती है जिसमें भेदभाव, पक्षपात, पूर्वाग्रहों की असमानताओं के बजाय शांति, सद्भाव, बंधुत्व, संवेदनशीलता, न्याय और मानवता होगी। सही शिक्षा की सबसे विशिष्ट विशेषता ज्ञान को 'प्रकृति में', 'प्रकृति का' और 'प्रकृति के लिए' विकसित करना है।

संदर्भ

1. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, (2007). समाजशास्त्रीय और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण। (एमईएस -51), ब्लॉक -2 स्कूलों के दर्शन और शिक्षा के लिए उनके निहितार्थ, यूनिट -3, नई दिल्ली.
2. कृष्णमूर्ति, (2015). सीखने की कला,(संपादनः अनुवाद प्रकोष्ठ, जे. कृष्णमूर्ति प्रज्ञा परिषद, वाराणसी). प्रकाशक, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट फोर्ट, वाराणसी.
3. कृष्णमूर्ति. जे., (2012). ज्ञात से मुक्ति, (हिन्दी अनुवाद कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया). प्रकाशक, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट फोर्ट, वाराणसी.
4. कृष्णमूर्ति. जे., (2012). संस्कृति का प्रश्न, (हिन्दी अनुवाद कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया). प्रकाशक, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट फोर्ट, वाराणसी.
5. गौर. ए.के. (2011).जे. कृष्णमूर्ति थॉट्स कॉन्करींग एडूकेशन. द जर्नल ऑफ इंडिया.
6. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय.(2007). समाजशास्त्रीय और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण। (एमईएस -51), ब्लॉक -2 स्कूलों के दर्शन और शिक्षा के लिए उनके निहितार्थ, यूनिट -3, नई दिल्ली.
7. शर्मा. आई.(1992). ए क्रिटिकल इवालुवेशन ऑफ जे. कृष्णमूर्ति थॉट्स ऑन एडूकेशन. पीएचडी थीसिस. दयालबाग, आगरा.
8. Https://rishyvalley.org/other/facilities
9. https://rishyvalley.org/arts
10. https://rishyvalley.org/arts